अंतरा-शब्दशक्ति

आर्यन

लघुकथा संग्रह

डॉ. सुनीता श्रीवास्तव

आर्यन

(लघुकथा संग्रह)

डॉ.सुनीता श्रीवास्तव

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-51-3

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ सुनीता श्रीवास्तव

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

“Aryan’ by 'Dr. Sunita Srivastav'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

अनजाने प्रिय पाठकों,

इस पुस्तक को आपके हाथों में सोपते हुये में जीवन के उस छोर को महसूस करती हूं जहां जीवन के सुख-दुख क्षितिज के समान नजर आते हैं ।

पारिवारिक जीवन यदि खुशहाल हैं तो हर मुश्किल आसान है वरना मान-सम्मान और उपलब्धियों का कोई औचित्य नही होता कही तो भी मन भटकता रहता है उस मर्गचिरिका के समान। पारिवारिक धागों की "कोमल बुनाई" वाले प्रसंग मन को स्पर्श कर जाते हैं, बच्चों की नटखटी बाते कभी कभार बहुत बड़ा सत्य उगेल देती है। मेरी पुस्तक "आर्यन" में पारिवारिक पात्रो की गाथा हैं जो हर घर परिवार में होती है छोटी छोटी बाते जीवन का सकून दे जाती है तो वही कभी जलती आग में घी डालने का काम करती है, तो कभी आपको रुला डालती हैं ।

अपने हार्ट स्वीट जब मन को व्यथित कर दे तो एक दुआ वेसे ही निकलती हैं मानो बन्दूक की गोली लगने के बाद हँसने की चेष्टा ।
इस पुस्तक में मेरी 12 लघुकथा हैं कहना होगा कि कमल तो कीचड़ में ही खिलता है जितना कीचड़ होगा कमल का स्वभाव ही होता हैं वो उतना ही ऊपर उठता है जितना कीचड़ से उठेगा उतना ही खूबसूरत होगा। जीवन जब कुछ कर गुजरने को उकसाया तो लेखन स्वतः बन्द हो जाता हैं मन करता है कागज से उकेरने के बदले उसे भोगा जाए।

इस पुस्तक को लिखने में मेरे जीवनसाथी उपेन्द्रजी तथा मेरे दोनो बेटे चिन्मय ओर संकल्प का तो अप्रत्यक्ष रूप से हाथ है पर मेरे नटखट पोते आर्यन का भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस पुस्तक में "चोट" कहानी ने मेरे अंतर्मन को गहराई से छुआ है जहाँ उम्र का अनुभव हार जाता है हर दर्द को किस तरह छुपाया जाता है यह सोच आँखे गीली नही होती सिर्फ अंतरमन रोता है उसी तरह से "सैंडिल" कहानी है जहां अहसास होता है किसी ने भरे बाजार में मानो सैंडिलों से मारा हो ।
"अटाला" कहानी में उस प्रोड इंसा का दर्द है जो जीवन की अंतिम साँसों में कोई कीमत अपने वजूद की देने में असमर्थ पाता है।

अंत मे यही कहूंगी कि "मेरे अपनो के लिये यही दुआ वे कभी किसी दुआ के मोहताज न हो" ईश्वर मेरा और अपनों का सहयोगी हो--

भवदीया
डॉ सुनीता श्रीवास्तव

अनुक्रमणिका

1. प्रमोशन 5

2. टोटका 6

3. स्मार्ट बीसवीं सदी के बच्चे 7

4. मौसी बनाम माँ 8

5. चोट 9

6. सेंडिल 10

7. ममता 11

8. अंधेर 12

9. अपने पराये का भेद 13

10. श्री गणेश 15

11. अटाला 15

12. फिक्र 16

प्रमोशन

घर में सुबह से ही बहुत रौनक थी ,सभी लोग चहक रहे थे ,वर्माजी बेटे के प्रमोशन की ख़ुशी से अपना दर्द भूला बैठे थे और पोते के साथ गुब्बारे फुलाने में लगे थे। पोता बोला -बाबाजी आज आप लेट क्यों नहीं रहे ,आप कुछ खा लें, तो वर्माजी मुस्कुरा कर बोले -आज तो पार्टी है ,शाम को ही जमकर खायेंगे ।
पोता बोला -
हाँ मैं तो आइसक्रीम खाऊँगा।

वर्माजी चौंके और ठंडी साँस भरी ,कई दिनों से उन्होंने ढंग से कुछ नहीं खाया था, भूख के मारे आँतें सिकुड़ रही थी। पर कुछ बोले नहीं, शाम का रास्ता देख रहे थे, शाम को सब मेहमान आकर खाने पीने में जुट गये ।वर्माजी बार -बार सोच रहे थे कि कोई उनसे भी खाने के लिये बोलेगा ,जब नहीं रहा गया तो उन्होंने नौकर बंशी से बोला -मुझे कुछ खाने को दो ।

बंशी ने सुना और तपाक से बोला ,जी बाबूजी और खाने की मेज से प्लेट सजाकर ले आया ।तभी बहू आ गई और बोली- बंसी तुम यहाँ क्या कर रहे हो और उसके हाथ से प्लेट ले कर आगे बढ़ गई बंसी बोला -मेम बाबूजी को भूख लगी है ।

तो बोली -बाबूजी, मालूम नहीं आज इनके प्रमोशन की पार्टी चल रही है और आपको खाने की पड़ी है ।

बाबूजी शून्य में देखते रहे और मजबूरन इधर उधर पड़ी प्लेट में से खाना लेकर खाते हुए सोच रहे थे, आज प्रमोशन पार्टी हैं कम से कम झूठन तो है।

टोटका

पड़ोस में रहने वाली मिसेजशर्माजी अपनी बाई के साथ बड़ी सी टोकरी लेकर घर के सामने से गुजर रही थी ,तो हँसकर मैंनेने पूछ ही लिया -मिसेज शर्मा,यह टोकरी में क्या है बड़ी सुगन्ध आ रही है ?

बोली -अरे ,वो मिनी बहुत दिनों से बीमार चल रही है सो 11 बार शरीर से उतारकर अला बला फेक रही हूँ।

मैंने बोला-आप इन चक्करों में न रहो, किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा दो।

हँसकर बोली --राशीजी ,यह टोटके भी रोग निवारक हैं, यदि कोई पशु पक्षी खा लेंगे तो बीमारी खत्म समझो, और सामने वाली कचरे की गली में वह टोकरा उड़ेल दिया।

वे तो चली गई पर उसे छत से सब दिख रहा था, थोड़ी देर वाद एक बूढ़ा सा आदमी कंधे पर थैला लेकर कचरे में से कुछ बीनकर भरने लगा पर यह क्या राशि ने देखा -वो भिखारी सा आदमी हल्दी कुंकुम लगा खाना जो मिसेज शर्मा ने भेजा था आराम से खा रहा था ,राशि भौंचक्की देख रही थी ।पशु पक्षी की जगह इंसान, उससे रहा नहीं गया तो उसने नीचे जाकर उससे कहा -यह मत खाओ यह टोटका है ,

तो वो बूढ़ा बोला यह तो गर्म गर्म बढ़िया खाना है मैंने तो आज तक नही खाया। उसके चेहरे पर अनोखी चमक थी ।

राशि सोच रही थी, इस टोटके से शर्माजी की मिनी ठीक हो या ना हो पर यह बूढ़ा जरूर ठीक हो जाएगा फिर बुदबुदाई **टोटका**।

स्मार्ट बीसवीं सदी के बच्चे

भोपाल जाने के लिये राशि रेलवेस्टेशन पर ट्रेन का इंतजार कर रही थी, तभी उसे सोनू चार, पाँच बच्चों के साथ दिखाई दिया उसे देख वो उत्सुकतावश वहाँ पहुँच गई। सोनू ट्रेन के गंदे पानी को खाली बोतल में उन बच्चों से भरवा रहा था, वो उन सब बच्चों को पहचान गई यह सब बच्चे सोनू की मॉम के पास आते हैं ।वो समाजसुधारक हैं और बच्चों को गलत बातों को ना करने की सीख नेताओं के कार्यक्रम आदि में देती रहती हैं। उसने सोनू से यों ही पूछ लिया- तुम इन बच्चों के साथ यहाँ क्या कर रहे हो ?

सोनू बोला ,आंटी यह बच्चे इधर उधर घूमते रहते हैं, तो इनकी टॉफी का इंतजाम कर रहा हूँ, कुछ धंधा ही सीख लें, तभी देखा वो बच्चे एक ट्रेन में चढ़ वे गन्दे पानी की बोतल मुसाफिर को वेच कर सोनू को 40 रु देकर बोले - भैया 4 बोतल बिक गई।

सोनू ने दो- दो रुपए उन पांच नो बच्चों को देकर कहा ,अब जाओ इससे गोलगप्पे खा लो और बाकी के पैसे अपनी जेब में रख लिये।

राशि ने जब उसे प्रश्न चिन्ह से देखा तो मुस्कुरा कर बोला -आंटी स्मार्ट और बीसवीं सदी के बच्चे हैं कुछ तो कमा कर खा रहे हैं और मैं भी कुछ खा लूँगा । हैरान हूँ स्मार्ट और बीसवीं सदी के बच्चों और समाजसेवा को लेकर।

मौसी बनाम माँ

हम लोगों के फ्लैट के पास ही त्रिवेदी जी का घर है ,हमारी खिड़की ओर उनकी खिड़की आमने सामने है ।यदि खिड़की खुली हो तो अंदर का दिखता भी है और बात भी होती रहती है ।त्रिवेदी जी की साली भी उनके साथ ही रहती है , दोनों बहनों में अपार प्यार है यह सब जानते हैं। त्रिवेदी जी तो साली पर जान छिड़कते हैं, अपने बच्चों से कहते रहते हैं, मौसी तो बच्चों की माँ समान होती है।

मिसेज त्रिवेदी एक कम्पनी में सेकेट्री है सुबह जाती है और रात में7,8 बजे तक आती है।

आज त्रिवेदी जी खिड़की बन्द करना भूल गये थे, उसने देखा तो घबरा गई त्रिवेदी जी साली के साथ संलग्न थे, माँ और मौसी का अंतर न होना उसे अब समझ आ रहा था। जब मन नहीं माना तो एक दिन मौका देख उसने त्रिवेदी जी की साली से पूछ ही लिया, मजाक में, तो बोली क्या करूँ आन्टी, दीदी को इशारा भी किया पर उनके लिये तो पति परमेश्वर हैं और बच्चे भी शक नहीं करते। पिता जी ने यहाँ पढ़ने के लिये छोड़ रखा है। दीदी और बच्चों के जाने के बाद मैं ही अकेली ही रहती हूँ। आप कुछ करके मुझे इस नर्क से छुटकारा दिलवाओ, अब तो इन गन्दी आदतों की आदी हो चुकी हूँ।

राशि त्रिवेदी जी की साली की बातों को सुनकर साली बनाम माँ के अर्थ से परिचित हो पीड़ा से भर गई।

चोट

बारिश थमने का नाम नहीं ले रही थी, बढ़ती उमस से लिखने पढ़ने से मन उचट गया ।उसने देखा बेटू की आखों में से झर झर आंसू बह रहे थे ,जिसे वो छुपाने की कोशिश कर रहा था ,एकदम से मन घबरा गया और पूछा 'बेटा क्या हुआ ?

उसने अपने सिर को दूसरी ओर घुमाकर कहा ,कुछ नहीं ,और नकली हँसी हँसने लगा ,पलक झपकते मामला समझ में आया। कुछ कहती तो शांत माहौल गरमा जाता, बेटू की मॉम सामने खड़ी आँखें तरेर रही थी, चुप रहना उचित समझा फिर तत्क्षण पर्स में हाथ डालकर खोलते हुए बेटू की शैली में बोलना पडा -देखो मेरे पर्स में क्या गिफ्ट है, वो धीरे से लपका और पर्स को पकड़ के रुम से बाहर, बेटू पीछे पीछे, कमरे से बाहर आकर सोफे पर धँसते हुए बेटू को पर्स सौंपते हुए उसे अपने पास खींचा ,पर यह क्या, वो बुखार में तप रहा था ।जब उसे पुचकारते हुए जानना चाहा तो बोला ,आज साइकिल से गिर गया देखो चोट,....

पेंट ऊँची कर देखा और जैसे ही बोलने को हुई उसने अपने दोनों हाथों से मुँह दबा दिया ऑर बोला -छोटी सी तो चोट है ।

जब कहा तुमने मम्मा को नही बताया तो बोला मम्मा बोली वो थक गई हैं और वीर बच्चे तो छोटी मोटी चोट और दर्द सहन करते ही हैं। सबको बताते नहीं कुछ देर बाद दर्द अपनेआप कम हो जाएगा

बगल से थर्मामीटर निकालते हुये देखा 102 डिग्री पर पारा था ,कुछ कहती तो बेटू की मम्मा का पारा चढ़ जाता।

वो बेटू को छोड़ मुझसे बोली आप उसे मत छेड़ो वो ठीक है। मैं थक रही और सोने जा रही हूँ।

बेटू को अपनी बाहों से अलग कर बोल उठी।हाँ, तुम आराम करो, इसके तो मैं कान खिंचती हूँ, छोटी-मोटी चोट तो लगती ही रहती है।

बेटू चोट के दर्द से सिसक को रोक रहा था ।

सेंडिल

बेटे को हार्ट अटैक हुये दो दिन ही हुए थे, डॉक्टर का कहना था टेन्शन मत देना, और ध्यान रखना। आज हॉस्पिटल से छुट्टी होने पर घर आ गये , सोचा, चलो, थोड़ा आराम करें, बेटे को दवा देकर अपने कमरे में जाकर पलँग पर लेट गई। मन बैचेन तो था ही, बहू बेटे के पास उसके कमरे में ही थी, इसलिए थोड़ी बेफिक्री थी। कब नींद लग गई पता नहीं चला, जोर जोर की आवाजों से नींद टूटी, देखा बहू गुस्से में चिल्ला रही थी और बेटा अपना सीना दबा मसल रहा था।

पूछा तो बहू लालपीली होकर बोली, मैं क्या करूँ, मेरी तबियत बिगड़ रही है, मुझे बाजार जाना है, बेटे ने उसे बोलने से रोका- माँ इसे बाजार जाने दो।

मुझसे रुका नहीं गया और बोला- क्या बाजार जाकर तबीयत ठीक हो जाएगी? तो बहू बोली, दवाई लानी है।

तब फिर में बोली वो तो कोई भी ले आएगा, लाओ मैं ले आती हूँ,बेटा बीमार है और तुम इस गम्भीर हालत में इससे तरह से पेश आ रही हो ।

वो बोली-बेटा, अरे ढोंग कर रहा है,मेरी दवा मैं खुद ही लाऊँगी किसी को लाने की जरूरत नहीं।

वो आगे बोले इसके पहले ही बेटे ने मेरे हाथ पकड़ कर कहा, आपको मना किया ना और बहू से बोला वो तुम्हारी टेक्सी मँगा दी है। बहू फर्र से बैठ चली गई।

बेटे की हालत देख कुछ बोलना ठीक नहीं लगा,बस सिर्फ सिर पर हाथ रखना चाहा तो उसने झिड़क दिया, और कमरे में बंद हो गया।

मन और बैचेन हो उठा ।बहू का इंतजार करने लगी बुदबुदा उठी - इसे जाने क्या बीमारी हो गई ..

थोड़ी देर बाद बहू आई और मेकअप करने में जुट गई उसके हावभाव देख पूछने की हिम्मत खो गई ।

मन माना नहीं, जब वो व्यस्त दिखी तो ,क्या दवा लाई है यह देखने के लिये पैकेट खोला तो उसमें चमचमाती सेंडिल रखे थे।

मन ही मन हँस उठी यह सेंडिल, दवा लाने के लिये तो तुमको ही जाना होगा, कभी सेंडिल देख रही हूँ तो कभी बीमार पड़े बेटे को,...

ममता

नौकरी पेशा ममता ने अभी तीन माह पूर्व ही नन्ही मोनी को जन्म था। पति सौरभ शहर से सौलहसौ किलोमीटर दूर, दूसरे शहर में जॉब करता है ,बीच बीच में वो ममता से मिलने ससुराल आ जाता था। ममता अभी माँ के पास ही रह रही थी। उसकी मैटरनिटी लीव भी खत्म हो चुकी है। आज से बेबी मोनी को माँ के पास छोड़कर वापस जॉब जॉइन करना था। माँ, ममता से बोली, आज इतने महीनों बाद ऑफिस जा रही हो, गाड़ी की चाबी, पर्स, रुमाल, घड़ी, मोबाइल सब कुछ रख लिया न। कुछ छूटा तो नहीं। पता नहीं माँ ठीक से मोनी का ख्याल रख पायेंगी या नहीं ममता की आँख भर आईं और उसने मन ही मन कहा, जो साथ रहना था (पति और मोनी) पैसे की मजबूरी और भागमभाग में परिवार और सुकून तो यहीं छूट गया इस नन्ही सी जान मोनी को अभी मेरी जरूरत है और उसे ही छोड़ कर जाना पड़ रहा है। पता नही मोनी और मैं कैसे एक दूसरे से अलग रह पायेंगे। रास्ते मे ममता को अपना बचपन और फिर शादी विदाई याद आ गई और मन ही मन वह सोचने लगी, जिस बेटी से जन्म के तीन माह बाद, आठ घण्टे के बिछोह में मेरा कलेजा तड़प रहा है, पता नही माँ ने कैसे अपने कलेजे पर पत्थर रखकर मुझे एक अजनबी के साथ इस विश्वास से विदा किया होगा कि वो मेरा ख्याल रखेंगे। सच बहुत मुश्किल है। मैं माँ पर भरोसा नहीं कर पा रही थी और माता-पिता कैसे खुद को तसल्ली देकर बेटी को विदा करते होंगे। सच कन्यादान बहुत मुश्किल काम है। आँखों में आँसू और चेहरे पे मुस्कान रखकर बेटी को डोली में विदा करना। सोचते सोचते वो ऑफिस पहुँच गई, माँ और मोनी को यादकर मुस्कुराने लगी।

अंधेर

मनीष जैसे ही घर के अंदर आया सामान बिखरा देख घबरा गया, उसने अंजू को आवाज लगाई, पर अंजू का कोई अतापता नहीं था। हार कर वो कुर्सी पर निढ़ाल होकर बैठ गया। कब नींद ने आ घेरा पता नहीं चला। जब अंजू ने उसे उठाया तो चौंका, अंजू बुरी तरह से घबराई नजर आई, उसने कहा, वो मीतू को पुलिस पकड़ कर ले गई है, तब वो चौंका।

अंजू ने रोते हुए कहा, क्या हम लोगों को जीने का हक नहीं है ,सामने वाला प्रिंस मीतू को रोज ही चिढ़ाता था, आज तो हद हो गई वो मेरे सामने उसको खींचकर ले गया और जब हमने शोर मचाया तो पुलिस को बुला लिया। नेता का बेटा है तो क्या मतलब बोलता है, मीतू मर्द है या औरत यह देखना चाहता हूँ। सबके सामने उसके कपड़े फाड़ डाले सब देखते रहे।

मनीष फौरन पुलिस स्टेशन भागा। वहाँ जाकर चिल्लाने लगा, पर सब उसे देख हँसने लगे, मीतू उसे देख रो कर बोली, पापा विनय को फोन करो, वह मन ही मन बोला विनय गरीब परिवार का लड़का है ,पेपर बाँटने का काम कर पढ़ाई कर रहा है ,वो क्या मदद करेगा? फिर भी, उसने विनय को फोन कर सब बताया विनय ने कहा ठीक है, मैं आ रहा हूँ। पलक झपकते विनय दो, तीन प्रेस रिपोर्टर को लेकर आ धमका, जैसे ही पुलिस स्टेशन में प्रेस रिपोर्टर आये,सभी के तेवर बदल गये उन्होंने कहा, क्या बात है, हमारी मीतू बहन को छोड़ो औऱ उसके पाँव छुओ, पुलिस का एक व्यक्ति बोला, आप कहाँ इस झमेले में पड़ते हैं, यह हिजड़े विनय के दोस्त, उस पर लपकते बोले, क्या बोला हमारी बहन को, कुदरत को क्या तू जानता है, अरे, देख यह पेपर हमारी बहन बोर्ड परीक्षा में अव्वल आई है, उस नेता के छोरे को डाल जेल में ओर विनय को लेकर जीप में बिठाकर बोले बाबूजी आप चलो ओर घबराओ मत अब थ्री जेंडर कितना देश का नाम करेगी, यह आज अखबार कह रहा है मनीष की आँखे भर आईं वो मन ही मन बुदबुदाया भगवान के यहाँ देर है पर अंधेर नहीं ।

अपने पराये का भेद

एक दिन विकास अपने मित्र मोहन के यहाँ वार्तालाप कर रहा था। इसी बीच मोहन का नौकर तरुण उन दोनों के लिए चाय नाश्ता लेकर आता है और उसके पैरों पे ठोकर लगती है। और पूरी की पूरी ट्रे गिर जाती है। ट्रे के गिरते ही एक पल को सन्नाटा छा जाता है क्योंकि बहुत ही कीमती काँच की कप प्लेट टूट कर बिखर जाते हैं, सहसा मोहन के चिल्लाने की आवाज आती है। तरुण, ये तुमनें क्या किया, आजकल तुम्हारा ध्यान बिल्कुल काम पर नहीं होता, बुरा भला कहा, अब जाओ यहाँ से खड़े खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो।

तरुण अपमानित सा वहाँ से चला जाता है और अपने काम पर लग जाता है। बात आई गई हो गई और चूंकि मोहन और विकास मित्र थे, सो उनका मिलना जुलना अक्सर घर पर हो जाया करता था। यही कोई बीस बाईस दिन बाद विकास का फिर से मोहन के घर जाना हुआ और फिर बात चीत का सिलसिला शुरू हुआ। फिर एक बार चाय नाश्ते की ट्रे सजी लेकिन इस बार ट्रे तरुण नही बल्कि मोहन की 9 साल की बेटी जो स्वभाव से थोड़ी जिद्दी थी, मम्मी विकास अंकल के लिए आज ट्रे मैं लेकर जाउंगी माँ कीमती ट्रे क्राकरी की दुहाई देती रही माँ के मना करने के बाद भी बेटी नहीं मानी और ट्रे लेकर ड्राइंग रूम में पहुँची।

जिसका डर था वही हुआ। बच्ची छोटी ही थी और ट्रे बड़ी और भारी, और सहसा उसका पैर फिसल गया और वो खुद को नहीं सम्भाल पाई, ये क्या कीमती ट्रे और महँगी क्राकरी एक बार फिर गर्म चाय सहित नीचे गिर गई। इस बार मोहन के मुख से चीख निकल गई और दौड़ कर बेटी के सन्मुख पहुँच गया तुम्हें चोट तो नहीं लगी, तुम पर गर्म चाय तो नहीं गिरी, बेटी तुम जली तो नहीं, कहीं लगी तो नहीं, सवालों और चिंता की बौछार हो गई। ईश्वर की कृपा से बेटी को कोई चोट नहीं लगी थी। विकास मन्द मन्द मुस्कुराने लगा। मोहन

की नज़र विकास पर पड़ी, क्या हुआ तुम मुस्कुरा रहे कोई बात है, तो तुम कह सकते हो।

विकास ने कहा नहीं कुछ खास नहीं ,लेकिन मोहन ने इस बार जोर देकर पूछा बताओ न विकास क्या हुआ। विकास ने कहा यही घटना जब तुम्हारे नौकर तरुण के साथ हुई थी तो तुमने उसकी चिंता नहीं की बल्कि उसे डाँटा, बुरा भला कहा और यही हादसा जब बेटी के साथ हुआ तो तुम्हारे माथे पर चिंता फिक्र सब झलक रही थी। तब तुम्हें अपने कीमती सामान से ज्यादा अपनी बेटी की फिक्र की, यही फर्क है इंसानियत और अपने पराये का।

विकास और भी बहुत कुछ कहता चला गया लेकिन मोहन तो अपने किये पर शर्मिंदा था, कुछ सुन और बोल ही नहीं पाया, तुरन्त तरुण को बुलाया और अपने उस कृत्य के लिए हाथ जोड़कर उससे माफी माँगी। लेकिन आज उसके मित्र ने उसे इंसानियत और अपने पराये का सच्चा पाठ पढ़ा दिया था। विकास ने कहा मोहन जब तक तुम ये अपने पराये का भेद नहीं मिटाओगे, तुम चाहे कितने भी अमीर आदमी बन जाओ लेकिन तुम कभी सफल इंसान नही बन पाओगे और न कभी जीवन का सच्चा आनंद ले पाओगे।

मोहन ने विकास की बातों को अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रण ले लिया और एक बार फिर ठहाकों की गूँज उनके घर पर साफ सुनाई दे रही थी।

श्री गणेश

बच्चों की चित्रकला की कक्षा चल रही थी, उसने उन सभी को गणेश बनाने के लिये कहा। सभी बच्चे गणेश बनाने लगे। जब सबकी चित्रकारी पूरी हो गई तो, उसने उन सभी से दिखाने के लिये कहा, छोटे साहिल का नम्बर आने पर वो भी मुस्कुराता उसे अपनी चित्रकारी दिखाने लगा, उसने देखा साहिल ने बड़े ही अच्छे गणेश भगवान बनाये थे, आख़िर कार उसे गुड देना ही पड़ा। वो अपनी तारीफ सुनकर बोला, मेम जब श्रीगणेश बन ही गये हैं तो क्यो ना आरती, पूजा कर श्रीगणेश करें, प्रति उत्तर में मुस्कुरा कर बोली, किस बात का श्रीगणेश, तो साहिल हैरत से देखते हुई बोला-रंगों ,ब्रशों से अच्छी बात का,... मैंने उससे कहा-कौनसी अच्छी बात ?

यही की सब भगवान बना सकते हैं, तो पापा मम्मी को किस बात का डर हम सब कर सकते हैं, बस वो आँखे मूंद बैठें।

मैं उसकी बातें सुन आवक थी सही है जो बच्चे भगवान बना सकते हैं, उनके माँ पिता को किस बात का डर ?

अटाला

शर्माजी आज बड़े खुश थे बेटे ने नया मकान खरीदा है, और ग्रह प्रवेश है। शर्माजी सोच रहे थे उनके कमरे को वे बड़े ही अच्छे ढंग से सजायेंगे,काफी सारी कल्पना उन्होंने कर ली,जब पूजा पाठ हो गई तो सब अपने अपने कमरों में घुस रहे थे, उन्होंने प्रश्न चिन्ह से बेटे बहु को देखा और कहा-बेटा मैं अपना सामान कहाँ रखूँ ?

बहू बोली पिताजी आप डॉगी वाले कमरे में पलंग डलवा लें जगह कम है।

बेटा बोला-पर अटाला पड़ा है वहाँ तो ?

बहू धीरे से बोली जिसे शर्माजी ने सुन लिया पिताजी कौनसे अटाले से कम हैं?

शर्माजी अपना पलंग खींचते हुय सोच रहे थे सही में उनका वजूद ही क्या, कोई अटाला वाला भी उनको नहीं खरीदेगा।

फिक्र

राशि पति के हार्ट अटैक के बाद परेशान हो उठी परिवार की पूरी जिम्मेदारी उस पर ही आ चुकी थी। जॉब के साथ उसने पार्ट टाइम भी जाना शुरू कर दिया, दोनों बच्चे समझदार थे, उसने बच्चों को समझा रखा था कि अड़ौसी पड़ौसी की बातों में ना आकर परखना।

जैसे ही वह घर से बाहर जाने को होती कोई न कोई पड़ोसन आ धमकती राशीजी आज तो छुट्‌टी है फिर भी ऑफिस जा रही हैं।

राशि झुंझला कर बोलती-वो जरूरी काम है आदि आदि यह रोजमर्रा की बातें थी, कल भी यही हुआ जैसे ही दरवाजा जाने को खोला पड़ोसन वर्मा जी की मिसेज़ बोल पड़ी -राशीजी आज भी देर से आएंगी?

बेटी इन सब बातों को समझती थी झल्ला कर बोली-आंटी आप मम्मा से रोज यह सब क्यों पूछती हैं?

पड़ोसन बोली-राशि की फिक्र है ना सो।

राशि चलते चलते फिक्र शब्द को सुन मुस्कुरा उठी फिक्र या जाँच-पड़ताल?

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. सुनीता श्रीवास्तव

जन्म - 03.07.1959, राजगढ़ (ब्योरा) म.प्र.

पता - एस.सी.एन. नं. 78, विकास प्राधिकरण रो हाऊस, पार्ट 1
फेज 2, म.नं. 674, निरंजपुर (इंदौर)

कार्यअनुभव
1. सांझ लोकस्वामी समाचार पत्र इंदौर (डाक और फीचर डेस्क)
2. नवभारत समाचार पत्र, इंदौर (विशेष सिटी रिपोर्टर)।
3. स्वदेश समाचार पत्र इंदौर (साप्ताहिक सप्तरंग) सम्पादक
4. चौथा संसार समाचार पत्र, इंदौर (साहित्य पेज) संपादक
5. एस.डी.ए. टाइम्स समाचार पत्र में डाक, फीचर और साहित्य पेज इंचार्ज
6. लाइव टू डे टी वी चैनल सिटी रिपोर्टर इंदौर।
7. विजन प्लस टीवी चैनल (खरगोन) ब्युरो चीफ।
8. वर्तमान - 99 टीवी चैनल - इंदौर।

प्रकाशित
1. शुभ संकल्प (कविता संग्रह), चिन्मय (कहानी संग्रह), चार (कहानी संग्रह) सत्य मेव जयते (स्वदेश समाचार पत्र में प्रकाशित लेख), यथार्थ चित्रण (नव-भारत समाचार पत्र में प्रकाशित कालोनियों की रिपोर्ट), दर्द (स्वदेश समाचार पत्र में प्रकाशित इंदौर शहर के एन.जी.ओ. की रिपोर्ट), नव भारत, स्वदेश, चौथा संसार, सॉझ लोक स्वामी, एस.डी.ए. टाइम्स, चेतना, रविवारिया आदि में कहानी, कविता, लेख आदि प्रकाशित।

आकाशवाणी एवं दुरदर्शन पर वार्ताओं का प्रसारण

सम्मान
1. श्रीनाथ कायस्थ समाज द्वारा सम्मान।
2. अखिल भारतीय कायस्थ समाज द्वारा सम्मान।
3. लायन्स वेस्ट क्लब द्वारा बेस्ट एक्टिविटी, फोटोग्राफी के लिए अवार्ड।
4. अहिल्या विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा साहित्य संगम सम्मान।
5. खरगोन साहित्य समिति द्वारा निमाड़ महिला सम्मान।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-51-3

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com